रजिस्ट्रेशन : निःशुल्क

रजिस्ट्रेशन एवं सारांश को अपलोड करने के लिए प्रतिभागी नीचे दिये गये लिंक पर क्लिक करें :

http://bit.ly/2B35t5j

सहभागिता तथा शोध प्रपत्र जमा करने हेतु दिशानिर्देशः

इच्छुक प्रतिभागी अपने शोध प्रपत्र का सारांश साफ्ट कॉपी (250 से 300 शब्दों में) दिये हुए विचार बिन्दुओं पर कृति देव 010 अथवा Times New Roman (font size 12) दिनांक 29 मई, 2020 तक निम्नलिखित ईमेल पर प्रेषित करें–

philosophywebinar2020@vkm.org.in

सभी प्रतिभागियों को ई–प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा।

वेबिनार मे प्रतिभागिता हेतु :

Meeting ID/Link (Through Google Meet)

ID – khd-pjmf-jmc

Link – meet.googke.com/khd-pjmf-jmc

(Google meet App may be downloaded via playstore/apple store or can easily join through this link by laptop/desktop

Live Streaming

https://bit.ly/3gaJ9GY

Youtube Link

http://bit.ly/2ymYB1p

संरक्षक

श्रीमती उमा भट्टाचार्या – प्रबन्धक

मार्गदर्शक

प्रो. रचना श्रीवास्तव – प्राचार्या

संयोजिका

डॉ. ममता मिश्रा – अध्यक्ष
एसोसिएट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग

सह संयोजक

डॉ. मनोज कुमार सिंह – असिस्टेन्ट प्रोफसर
दर्शनशास्त्र विभाग

आयोजन समिति

1.डॉ. कल्पना आनन्द, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

2.डॉ. सपना भूषण, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

3.डॉ. पूर्णिमा सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग

4.डॉ. प्रतिमा सिंह, अतिथि प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग

तकनीकी सहायक

1. डॉ. अन्नपूर्णा, प्रशासनिक अधिकारी

2. श्री चन्द्रकान्त चटर्जी, तकनिकी सहायक

3.श्री कपिलदेव यादव, कनिष्ठ लिपिक

वसन्त कन्या महाविद्यालय

(एडमिटिड टू द प्रिविलिजिस ऑफ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी)

कमच्छा, वाराणसी–221010

"नैक" द्वारा 'A' प्रमाणित

EDUCATION AS SERVICE

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार

"वैश्विक महामारी से उत्पन्न समस्याओं के निवारण में सहायक योग"

30 मई, 2020

समय : 12:30 – 1:45

आयोजक

दर्शनशास्त्र विभाग

वसन्त कन्या महाविद्यालय

कमच्छा, वाराणसी–221010

महाविद्यालय के विषय में

वसन्त कन्या महाविद्यालय की स्थापना १९५४ में हुई। डॉ० एनीबेसेण्ट द्वारा स्थापित संस्था के राजघाट स्थानान्तरित होने के उपरान्त डॉ० बेसेण्ट के ही आदर्शों तथा शिक्षा–सिद्धान्तों को समर्पित महान् दार्शनिक व शिक्षाविद् डॉ० रोहित मेहता जी द्वारा स्थापित यह महाविद्यालय कमच्छा स्थित थिओसॉफिकल सोसायटी, भारतीय शाखा के सुरम्य परिसर में विद्यमान है। "शिक्षा ही सेवा है" के मूल मंत्र से अनुप्राणित यह संस्था प्राचीन परंपराओं को अपनाते हुए उसमें आधुनिक वैज्ञानिक विचारों का सन्निवेश करते हुए निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तित्व–विकास, उत्तम चरित्र निर्माण, अनुशासनप्रियता एवं सांस्कृतिक–बोध के बीज छात्राओं में बो रही है। यह महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होकर स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर उच्चपरीक्षाफल, (विभिन्न विषयों में अनवरत रूप से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक के साथ) उत्तम सांस्कृतिक–कार्यक्रमों एवं विविध शिक्षणेतर गतिविधियों से अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। महाविद्यालय वर्तमान में शोधकार्य, स्नातकोत्तर तथा स्नातक पाठ्यक्रमों के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एकाधिक डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का विविध विषयों में समर्थ संचालन कर रहा है। इसकी उत्कृष्ट गुणवत्ता को मापते हुए राष्ट्रीय प्रत्यायन एवं मूल्यांकन केन्द्र ने इसे २०१७–२०१८ में A श्रेणी प्रदान की है।

उत्तरवाहिनी भागीरथी गंगा के पश्चिम तट पर अवस्थित भारतवर्ष की सुप्राचीन, सांस्कृतिक एवं वैचारिक अभ्युत्थान की केन्द्र काशी नगरी सदा से ही वैदिक, जैन, बौद्ध, शैव एवं वैष्णव आदि अनेक दार्शनिक मत–मतान्तरों के अध्ययन व अध्यापन के लिये विख्यात रही है। कालान्तर में हिन्दी साहित्य के संत शिरोमणि कबीर, तुलसी, रैदास आदि महान् विचारकों की भूमि होने के गौरव से भी यह समन्वित रही है। कबीर ने तो श्रमजीवी साधुता के प्रतीक रूप में अपने उदात्त आवाहनों, चिन्तन व कर्मशीलता से काशी के जनमानस को गम्भीर रूप से आन्दोलित किया। हाशिये के समाज को देश की मुख्य धारा से जोड़ा उनके भीतर नवप्राण का संचार किया। यही कारण था कि डॉ० श्रीमती एनी बेसेण्ट ने भी भारतवर्ष में आगमन के पश्चात् काशी की इस रत्नगर्भा भूमि को ही अपने कार्यक्षेत्र तथा शिक्षा–सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के केन्द्र के रूप में स्वीकार किया था।

विषय वस्तु

जीवेत शरदः शतम् की आकांक्षा रखने वाले मानव के जीवन को आज इस वैश्विक संकट ने भयग्रस्त कर दिया है। कल तक विकास का दम्भ भरने वाला मानव सृष्टि को अपनी दृष्टि के अनुरूप संचारित करता था। उसके विकास के पहिए उन दिव्य तत्त्वों से निर्मित थे जिनका निर्माता एवं निर्धारक वह स्वयं था, किन्तु इस महामारी ने उसके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है। वह यह सोचने पर विवश हो गया है कि क्या कल हमारा भविष्य पहले की तरह भयमुक्त हो सकेगा? क्या वह पुनः पहले की तरह कार्य कर पायेगा? इस महामारी के बाद विश्व का स्वरूप कैसा होगा? इस महामारी ने मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक एवं वैयक्तिक सभी पक्षों को प्रभावित किया है। अब तक इस महामारी से लगभग 1,25,000 से ऊपर लोग प्रभावित हो चुके हैं।

ऐसे वैश्विक संकट में भारत का दायित्व इस दृष्टि से और भी बढ़ जाता है क्योंकि प्राचीनकाल से ही भारत विश्व के लिए प्रकाशपुंज के रूप में सदैव पथ–प्रदर्शक रहा है। इसकी शाश्वत परम्परा में प्रतिध्वनित जीवन दृष्टि एवं उस परम्परा का वाहक योग निसंदेह रूप से इस समस्या के समाधान में सर्वाधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। योग हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ सकारात्मक सोच को विकसित कर इस समस्या से लड़ने के लिए आत्मबल प्रदान करेगा।

विचार बिन्दुः

- बदलते वैश्विक परिदृश्य में स्वस्थ एवं सबल राष्ट्र के निर्माण में योग का महत्त्व।
- वैश्विक महामारी में सकारात्मकता के निर्माण में योग की भूमिका।
- संकटग्रस्त वर्तमान एवं संशयग्रस्त भविष्य के अवसाद से मुक्ति में योग की प्रासंगिकता।
- शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं के समाधान में सहायक योग।

वक्ता –

उद्घाटन उद्बोधन – डॉ0 अनीता चौधरी, स्त्री रोग विशेषज्ञ

समापन उद्बोधन – डॉ0 आनन्द कर्ण, दर्शनशास्त्र विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय